JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN

(DEEMED UNIVERSITY)

RET JULY - 2016

PART – III (CONCERN SUBJECT)

PRAKRIT

DATE OF EXAMINATION :

ROLL NO. : **SIG. OF INVIGILATOR**

TOTAL TIME (PART-I TO III) : 03 HOURS **MARKS : 50X2=100**

NOTE :

1. All questions are compulsory and of objective type. / सभी प्रश्न अनिवार्य एवं वस्तुनिष्ठ हैं।
2. All questions carry equal marks. / सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
3. Only one answer is to be given for each question. / प्रत्येक प्रश्न का एक ही उत्तर देना है।
4. If more than one answer is marked, it would be treated as wrong answer. / एक से अधिक उत्तर देने की दशा में प्रश्न के उत्तर को गलत माना जायेगा।

1. प्राकृत भाषा के सम्बन्ध में आचार्य हेमचन्द्र का कथन यह है –

(अ) प्रकृतिः संस्कृतम्। तत्र भवं प्राकृतमुच्यते।

(ब) प्रकृतिः संस्कृतम्। तत्र भवं तत् आगतं व प्राकृतम्।

(स) प्रकृतेः आगतं प्राकृतम्। प्रकृतिः संस्कृतम्।

(द) प्रकृतेः संस्कृताद् आगतमं प्राकृतम्।

( )

2. कालम 'क' से कालम 'ख' का मिलान कीजिए –

कालम 'क'	कालम 'ख'
1. अपभ्रंश	क. सामवेद
2. पैशाची	ख. पूर्वी प्रदेश में बोली जाने वाली
3. छान्दस्	ग. 11 वीं शताब्दी
4. प्राच्या	घ. विलासवई कहा
5 नमि साधु	ड. वृहत्कथा कोश

सही विकल्प है–

(अ) 1–ड., 2–घ, 3–क, 4–ग, 5–ख,
(ब) 1–घ, 2–ड., 3–क, 4–ख, 5–ग,
(स) 1–ग, 2–ड., 3–ख, 4–क, 5–घ,
(द) 1–घ, 2–क, 3–ग, 4–ख, 5–ड.,

( )

3. 'पासण्ड' शब्द का उल्लेख इस शिलालेख में है–

(अ) अशोक के द्वितीय शिलालेख में (ब) अशोक के सप्तम शिलालेख में

(स) हाथी गुम्फा अभिलेख में (द) रूद्रदामन के अभिलेख में

( )

4. मागधी प्राकृत के सम्बन्ध में यह कथन सत्य नहीं है –

(अ) शकार द्वारा इस भाषा का प्रयोग किया किया जाना।

(ब) 'र' के स्थान पर ल'' का प्रयोग होना।

(स) 'त' के स्थान पर 'द' का प्रयोग होना।

(द) प्रथमा विभक्ति में 'ओ' के स्थान पर 'ए' का प्रयोग होना।

( )

5. दृष्टिवाद अंग–आगम ग्रन्थ के इतने भाग हैं –

(अ) पाँच (ब) सात

(स) नौ (द) ग्यारह

( )

6. यह कथन सही नहीं है –

(अ) पउमचरियं के रचनाकार आचार्य विमलसूरि हैं।

(ब) पउमचरियं की भाषा महाराष्ट्री प्राकृत है।

(स) पउमचरियं का रचनाकाल 9वीं शताब्दी है।

(द) पउमचरियं प्राकृत का एक महाकाव्य है।

( )

7. 'कम्मपयडि' ग्रन्थ के लेखक यह हैं –

(अ) शुभचन्द्र (ब) शिवशर्म

(स) शिवार्य (द) शामकुण्ड

( )

8. 'पण्णवणा' इस ग्रन्थ समूह में सम्मिलित है –

(अ) अंग आगम (ब) उपांग–आगम

(स) मूलसूत्र (द) पइण्णाइं

( )

9. 'रज्जुक' नामक अधिकारी थे –

(अ) मठाधीश नामक अधिकारी

(ब) प्रदेश के सर्वोच्च अधिकारी

(स) भूमि नापने वाले अधिकारी

(द) मानस्तंभ बनाने वाले अधिकारी

( )

10. 'रयणावली' इस ग्रन्थ का अपर नाम है –

(अ) लीलावई कहा (स) कुवलयमाला कहा

(स) पाइयलच्छीनाममाला (द) देशीनाममाला

( )

11. अर्द्धमागधी आगम यहाँ एवं इनकी अध्यक्षता में लिपिबद्ध हुए–

(अ) पाटलिपुत्र–स्थूलभद्राचार्य

(ब) मथुरा–आर्य स्कन्दिल

(स) श्रवणबेलगोला–नागार्जुन

(द) वलभी– देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

( )

12. 'पोवः' सूत्र का उदाहरण है–

(अ) उवासग (ब) पावक

(स) माहप्पा (द) अप्पा

( )

13. 'मुखियकलं च वोच्छिण्णं चोयठि अंग सतिकं' का प्रयोग हुआ है–

(अ) सेतुबन्ध में

(ब) मृच्छकटिकं में

(ब) अशोक के शिलालेख में

(द) हाथीगुम्फा अभिलेख में

( )

14. 'थुदि' इसका उदाहरण है –

(अ) वर्ण व्यत्यय

(ब) आदि स्वर लोप

(स) विषमीकरण

(द) आदि व्यंजन लोप

( )

15. यह कथन सही नहीं है –

(अ) गउडवहो कुलकों में विभक्त है।

(ब) गउडवहो एक ऐतिहासिक महाकाव्य है।

(स) गउडवहो के रचनाकार जयवल्लभ हैं।

(द) गउडवहो में कन्नौज के राजा यशोवर्मा की प्रसंशा की गई है।

( )

16. अधोलिखित इकाई प्रथम एवं इकाई द्वितीय को सही उत्तर के मिलान के लिए पढ़िये –

इकाई प्रथम	**इकाई द्वितीय**
(क) धम्ममहामाता	(i) हाथी गुम्फा अभिलेख
(ख) देहली–टोपरा स्तंभ लेख	(ii) पंचम गिरनार अभिलेख
(ग) गोरथगिरिं	(iii) सम्राट् खारवेल
(घ) रज्जुक	(iv) प्रथम गिरनार अभिलेख

सही उत्तर का चयन कीजिए–

(अ) (क) + (ii)

(ब) (ख) + (i)

(स) (ग) + (iv)

(द) (घ) + (iii)

( )

17. अधोलिखित ग्रन्थ समूह अर्द्धमागधी आगमों का सही समूह है –

(अ) आयारो, सूयगडो, पवयणसारो, पण्णवणा

(ब) उवासगदसाओ, कत्तिगेयाणुवेक्खा, दसवेआलियं, उत्तरज्झयणाणि

(स) पण्हवागरणाइं, भगवई, अंतगडदसाओ, वण्हिदसाओ

(द) आयारो, समवायांग, णायाधम्मकहा, धवला

( )

18. सम्राट् खारवेल ने जिन (तीर्थंकर) प्रतिमा को इससे जीतकर पुनः कलिंग में स्थापित की थी–

(अ) नन्द वंश (ब) होय्यशल वंश

(स) चेदि वंश (द) मौर्य वंश

( )

19. यह कथन सही नहीं है –

(अ) मागधी प्राकृत भाषा में 'र' का 'ल' होता है।

(ब) शौरसेनी में 'त' का 'द' होता है।

(स) अपभ्रंश में दीर्घ स्वरों का ही प्रयोग होता है।

(द) पैशाची की प्रकृति शौरसेनी है।

( )

20. प्रथम एवं द्वितीय इकाईयों को सही मिलान के लिए पढ़िए–

इकाई प्रथम	**इकाई द्वितीय**
(क) रामपाणिवाद	(i) सेतुबन्ध
(ख) हाल	(ii) वज्जालग्गं
(ग) जयवल्लभ	(iii) कंसवहो
(घ) प्रवरसेन	(iv) गाहासत्तसई

सही उत्तर का चयन कीजिए–

	(क)	(ख)	(ग)	(घ)
(अ)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)
(ब)	(iii)	(iv)	(ii)	(i)
(स)	(iv)	(iii)	(i)	(ii)
(द)	(iii)	(i)	(ii)	(iv)

( )

21. संयुक्त व्यंजन से पूर्व स्थित स्वर का यह होता है –

(अ) दीर्घ (ब) ह्रस्व

(स) प्लुत (द) विसर्ग

( )

22. यह कथन सही है–

(अ) प्राकृत भाषा में चतुर्थी विभक्ति का लोप नहीं है।

(ब) प्राकृत में रेफ (र्) एवं अवग्रह (ऽ) का प्रयोग यथावत् किया जाता है।

(स) प्राकृत में विसर्ग का मात्र द्वित्व होता है।

(द) प्राकृत में 'ऋ' के चार– अ, इ, उ, रि में परिवर्तन होता है।

( )

23. यह मूर्धन्यीकरण का उदाहरण है –

(अ) नटः > नडो (ब) कृतः > कओ

(स) प्रथमम् > पढमं (द) सदा > सया

( )

24. वृत्तिजातसमुच्चय एवं कविदर्पण (कविदप्पण) हैं–

(अ) व्याकरण शास्त्र (ब) स्तोत्र साहित्य

(स) अलंकार शास्त्र (द) छंद शास्त्र

( )

25. प्राकृत में शतृ (शर्तृ) प्रत्यय का रूप यह है –

(अ) ऊण (ब) त्ता

(स) तिअ (द) न्त

( )

26. यह वाक्य शुद्ध है–

(अ) अहं जग्गिहिसि (ब) सा उस्सरामो

(स) तुम्हे पढंति (द) अम्हे नमामो

( )

27. 'अमियं पाउअकव्वं' गाथा–पद उद्धृत है–

(अ) कर्पूरमंजरी में (ब) वज्जालग्गं में

(स) सेतुबन्ध में (द) कुवलयमालाकहा में

( )

28. शौरसेनी प्राकृत में 'थ' के स्थान पर होता है–

(अ) त (ब) द

(स) ध (द) म

( )

29. 'पानाडिं नगरं पवेस (च) ति' पद में 'पानाडिं' का अर्थ है–

(अ) नहर (ब) हवा

(स) खजाना (द) जिन–प्रतिमा

( )

30. 'गाहिणी एवं सिंहिणी' छन्द के संदर्भ में कौनसा विकल्प सही नहीं है–

(अ) एक दूसरे से उल्टे छन्द

(ब) दोनों में समान मात्राएँ होना

(स) 32 एवं 32 कुल 64 मात्राएँ होना

(द) क्रमशः 12, 18, 12, 15 मात्राएँ होना

( )

31. ''घोरासमं चइत्ताणं'' पद में 'घोरासमं' पद का अर्थ है–

(अ) श्रमण धर्म (ब) गृहस्थ धर्म

(स) संथारा (द) अत्यधिक श्रम

( )

32. यह उद्धरण अशोकीय अभिलेख में नहीं है –

(अ) न च समाजो कतव्यो। बहुकं हि दोसं समाजम्हि पसति।

(ब) धम्मचरणेन भेरीघोसो अहो धंमघोसो विमानदंसणा च हस्तिदसणा च

(स) कलिंगराजवस–पुरिसयुगे माहाराजाभिसेचनं पापुनाति अभिसितमतो च

(द) अपफलं तु खो एतारिसं मंगलं। अयं तु महाफले मंगले य धंममंगले।

( )

33. कुवलयमाला कहा के मंगलाचरण में इन तीर्थंकर को प्रणाम किया गया है –

(अ) प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव

(ब) 22 वें तीर्थंकर नेमिनाथ

(स) 23 वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ

(द) 16 वें तीर्थंकर शान्तिनाथ

( )

34. कुवलयमाला कहा के पाठ्यांश में कवियों के उल्लेख वाला सही समूह है –

(अ) पादलिप्तसूरि, विमलसूरि, देवगुप्त, स्थूलभद्र

(ब) पादलिप्तसूरि, रविषेण, प्रभंजन, संघदासगणि

(स) पादलिप्तसूरि, हालकवि, हरिभद्रसूरि, रामपाणिवाद

(द) पादलिप्तसूरि, विमलसूरि, वंदिक, प्रभंजन

( )

35. भाष्यकार एवं कथाकार के रूप में मान्य रचनाकार हैं –

(अ) हरिभद्रसूरि (ब) संघदासगणि

(स) जिनदासगणि महत्तर (द) जिनभद्रगणि

( )

36. सही युग्म पहिचानिये –

(अ) कुवलयमाला– हरिभद्रसूरि

(ब) नम्मयासुन्दरी– महेन्द्रसूरि

(स) जयधवला–पुष्पदंत, भूतवली

(द) त्रिलोकसार– यतिवृषभ

( )

37. ''सद्दो बन्धो सुहमो, थूलो संठाण भेद तम छाया।'' इस उद्धरण में इसकी विशेषताएँ हैं –

(अ) धर्म द्रव्य (ब) अधर्म द्रव्य

(स) पुद्गल द्रव्य (द) आकाश द्रव्य

( )

38. जैन कला वैभव के रूप में प्रसिद्ध प्राचीन स्थान है–

(अ) मथुरा (ब) उज्जयिनी

(स) अयोध्या (द) पटना

( )

39. ''भारत कला भवन'' यहाँ स्थित है–

(अ) वाराणसी (ब) वैशाली

(स) मैसूर (द) श्रवणवेलगोला

( )

40. यह कथन सही है –

(अ) ''चारुदत्त'' अभिज्ञान–शाकुन्तलं का नायक है।

(ब) मृच्छकटिकं में नायिका शकुन्तला ऋषि से श्राप प्राप्त करती है।

(स) कर्पूरमंजरी सट्टक में प्रवेशक एवं विष्कम्भक पात्र नहीं हैं।

(द) रम्भामंजरी सट्टक के रचयिता राजशेखर हैं।

( )

41. ''अज्जिया गुल्लिका'' का सम्बन्ध इससे है –

(अ) ऋषभ तीर्थंकर (ब) महावीर तीर्थंकर

(स) बाहुवली (द) सुकुमाल स्वामी

( )

42. ''आदा णाणपमाणं'' पंक्ति इस ग्रन्थ की है–

(अ) कुम्मापुत्तचरियं (ब) परीक्षामुखम्

(स) पवयणसारो (द) सम्मइसुत्तं

( )

43. समराइच्चकहा के प्रमुख पात्र हैं–

(अ) चण्डसोम–मानभट्ट

(ब) गुणसेन–अग्निशर्मा

(स) श्रीपाल–धनदेव

(द) समुद्रदेव–धनदत्त

( )

44. ''जेण विणा लोगस्स वि ववहारो सव्वहा ण णिव्वडइ।'' यह पंक्ति इस ग्रन्थ से उद्धृत है –

(अ) सम्मइसुत्तं (ब) भगवई सुत्तं

(स) दव्व–संगहो (द) उत्तरज्झयणाणि

( )

45. ''कविदप्पण'' ग्रन्थ इस विधा से सम्बन्धित है –

(अ) अलंकार शास्त्र (ब) छन्द शास्त्र

(स) काव्य शास्त्र (द) कोष शास्त्र

( )

46. ''पाइयलच्छीनाममाला'' के रचनाकार हैं –

(अ) हेमचन्द्राचार्य (ब) संघदासगणि

(स) धनपाल (द) गुणाढ्य

( )

47. ''मृच्छकटिकं'' की नाट्यविधा यह है –

(अ) नाटक (ब) प्रकरण

(स) प्रहसन (द) सट्टक

( )

48. गुणाढ्यकृत ''वृहत्कथाकोश'' की भाषा यह है –

(अ) शौरसेनी (ब) मागधी

(स) पैशाची (द) अपभ्रंश

( )

49. ''राम'' शब्द का प्राकृत में पंचमी एकवचन का रूप है –

(अ) रामाओ (ब) रामम्मि

(स) रामाणं (द) रामेणं

( )

50. अधोलिखित कथनों में से सही उत्तर के मिलान को पहचानिए –

(i) प्राकृत में अन्त्य व्यंजन नहीं होता।

(ii) प्राकृत में द्विवचन होता है।

(iii) चतुर्थी विभक्ति के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग नहीं होता है।

(iv) गम् धातु के स्थान पर गच्छ आदेश होता है।

सही उत्तर का चयन कीजिए–

(अ) (i) + (ii)

(ब) (i) + (iii)

(स) (i) + (iii) + (iv)

(द) (i) + (iv)

( )

●●●